

PRESS & MEDIA



CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE,
ROORKEE, UTTARAKHAND





Published in: Rashtriya sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.



अंतरराष्ट्रीय

राज्य

टेक्नोलॉजी

ट्रेवल

राष्ट्रीय

लोकल न्यूज़

स्वास्थ्य

LIVE TV

CONTACT

उत्तराखंड

खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI



By Sahara Live News

□ AUG 31, 2025





राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरान्त, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9715>

CSIR-CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29-31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.

Presented in Newspaper: Hindustan



Uk Bharat
सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun Hāridwar Roorkee Uncategorized

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

© Uk Bharat August 29, 2025



सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुँएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- <https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/>

CSIR-CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

सहारा लाइव
NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उपरासंड

शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता



By Sahara Live News
© AUG 21, 2025


सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुई हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रौद्योगिकियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपन की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9680>

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.



भारत

TOI DEADLY CLOUDBURST HITS KISHTWAR'S CHISHOTI VILLAGE CAUSING FLASH FLOODS

Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarakash's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? [Go Ad Free Now](#)

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glacial lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.



Presented in Newspaper: Dainik Jagran



Presented in Newspaper: Jagran

जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन

टीका इंडियाल • जगहन



डॉ. अजय चौरसिया • जगहन

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बाढ़ल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डॉ. अजय चौरसिया का।

डॉ. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष

राहत की पहले से हो तैयारी विज्ञानी डॉ. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कत आती है। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान डॉ. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के

50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशोमठ भूधंसव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशोमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। डूनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मौके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बृहस्पतिवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेगी। ज्ञात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.

की सहायता की गई। कार्यक्रम में अनुभव विपद हुआ।

SHUSHAM PROPERTIES AND BUILDERS

Supreme Comfort & Serenity

120/1, MIDC Area, Main, Chauri

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorkee –CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.



Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.



• The Times Of Suncity
(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorkee

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled "*Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)*" by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

उत्तराखंड

Skill Initiative Program.



By Sahara Live News

○ JUL 28, 2025



Inauguration of Five-Day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation at CSIR-CBRI, Roorkee
Roorkee, July 28, 2025:

A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9548>



Published in Dainik Jagran

CSIR–CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.

Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by

Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Dis-

aster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far.

→P8

Published in Hindustan Times Newspaper

Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a



Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Published in Times New Network Newspaper

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

गृह मंत्री शाह का निर्देश-पता लगाएं, क्यों बढ़ी आपदाएं

अमर उजाला ब्यूरो



नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, अचानक बाढ़ आने और भूखंडन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर संघन किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, भूखंडन और भूस्खलन की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। इससे राज्य में व्यापक जनहानि, बुनियादी ढांचे और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है।

शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एडीआरएम), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, भारतीय उष्णदशोष्ण मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, भूविज्ञान और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के विशेषज्ञों को एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ सहयोग से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल ले रहा हालात का जायजा। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूखंडन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञान का इस्तेमाल किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। वह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों को भी लगातार की जा रही है मदद। हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों को सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मोचन निधि से 198.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिस्सेदारी को पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों को आवश्यक राष्ट्रीय आपदा मोचन बाल (एडीआरएम) टोम, सेना टोम और वायु सेना को तेजगति से सहायता संपूर्ण प्रकार को सार सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परियोजना को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 7 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये की पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

Published in Amar Ujala Newspaper

Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का भव्य समापन — युवाओं को मिली ऊर्जा दक्ष और सतत भवन निर्माण तकनीकों की गहन जानकारी

📍 bahadrabadnews 📅 July 19, 2025 🕒 11:21 am



(शहजाद अली रहिद्वार)रुड़की, 18 जुलाई 2025: सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियाँ" का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।



यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।



वल्कि उन्हें सतत और ऊर्जा दक्ष निर्माण तकनीकों से भी अवगत कराते हैं। उन्होंने भवन निर्माण क्षेत्र में तकनीकी विकास और पर्यावरणीय स्थायित्व को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।



ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- <https://bahadrabadnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/>

उत्तराखंड

"Latest Trends in Building Construction"



By Sahara Live News

🕒 JUL 16, 2025



Three-Day Training Program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, "Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today's youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges." He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI's state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9509>

CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.07.2025



आरिफ निपाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल बिस्किंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुशिर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दितलस्य प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्क्रूटी छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और त्वरित निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33804>

उत्तराखंड

डेस्टिनेशन हिमाचल 2025



By Sahara Live News

© JUL 3, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9454>

From 2nd-4th July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

राष्ट्रीय
अंतरराष्ट्रीय
खास खबर
राजनीति
लोकतन्त्र
स्वास्थ्य
राज्य
शिक्षा
एक्सक्लूसिव
बॉलीवुड

Q Live

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के द्वारे पर पहुंचे।



सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के द्वारे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. परशियाल, एस. के. सिंह, डॉ. घंटन स्वरूप मीणा, आशीष विप्लव, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. सीमा चौरसिया उपस्थित रहे। आगंतुक विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, लिक्विफैक्शन प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग लेब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑपन वेल्ड फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33794>

उत्तराखण्ड

हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।



By Sahara Live News
© JUN 28, 2025



सीएसआईआर सीबीआईआई, रुड़की में टीबी, सीएसआईआर और सहित, टीएसआईआर, भारत सरकार एवं सहित, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन
रुड़की, 28/06/2025.

सीएसआईआर - सेंट्रल विज्ञान रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआईआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं टीएसआईआर, भारत सरकार की सहित डॉ. (बीमल) एस. कलाईसेली तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सहित डॉ. एस. रविचंद्रन संस्थान के द्वार पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआईआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ सहित वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अमर चौहान, डॉ. टी. पी. कन्नू, डॉ. पी. सी. भट्टाचार्य, एस. के. सिंह, डॉ. वंदन सरस्वती, आशीष शिखर, डॉ. हेमलता, डॉ. हीम गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीन चौधरी उपस्थित रहे। अग्रिम विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरसात दीर्घा (Veerat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETP), डीएसएल प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग टेब, अति अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं अंतरिक्ष वेब कवर प्रिंटिंग सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआईआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनें, 12000 फीट की ऊँचाई पर solar upsur उपयोग योग्य solar water heater और तापीय प्रणाली, अति सुरक्षा अभियंत्रण, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARA Project के अंतर्गत तेज-तदास जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित अत्याधुनिक संरचनाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए: "To touch the untouched, to reach the unreachable"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सहित डॉ. एस. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-समृद्ध और नवाचार-केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआईआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और अस्पटा-रोपी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआईआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रदर्शित करने की आवश्यकता पर बत दिया ताकि उनका लाभ सुदूरदर्शी और अस्पटा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को सुविधा भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9416>

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किराया और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सकें, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो, डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33769>

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखंड

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”



By Sahara Live News

© JUN 23, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9387>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर



By Sahara Live News

© JUN 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासांनी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9345>

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे

श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी जिम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9334>

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

स्वच्छता सबका दायित्व 'प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सी बी आर आई



By Sahara Live News

© MAY 15, 2025



"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की पकृत स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआईआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएफटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तीना चौरशिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. तीना चौरशिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षारोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआईआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआईआरआई कर्मचारियों और बाबू विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआईआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्यकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के समग्र प्रयत्नों की सराहना की। उन्होंने स्वच्छता के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपविष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जैन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उत्कृष्टता प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्लोगन और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मेठी द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बाबू विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आभोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआईआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आयोजन देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- <https://www.janmudde.com/archives/33392>

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness. The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

[Published in Jan Mudde E-newspaper](#)

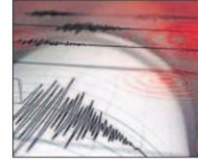
आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एंजियेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह



निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संशोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरे जोखिम

क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएसकोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और पैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इनफिल दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन्स और त्वरित ऑकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का संपादन सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिपल, मिनी दलवेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मोना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीबी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी आदि शामिल रहे।

[Published in Hindustan Times](#)

खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स रुड़की (आरिफ़ नियाज़ी) रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल

के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर



दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.बी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानूनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे।

[Published in Golden Times E-newspaper](#)

❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

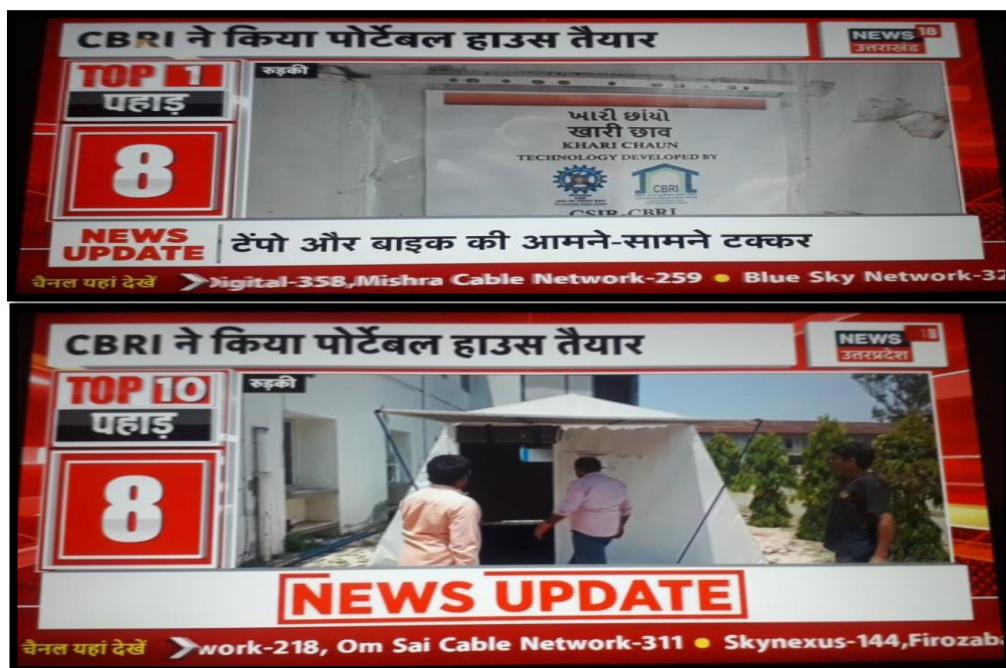
By Sahara Live News
© MAY 13, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तोत्तरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव
रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9252>

❖ Television News :-



[Telecasted in News Uttar Pradesh Channel](#)



[Telecasted in Nai Aawaz Channel](#)

Media Clips of a Technical Panel-discussion on “Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake” held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हलित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पुछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धत के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वाली का समर्थन करने के लिए, प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मोघा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हलित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पुछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धत के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वाली का समर्थन करने के लिए, प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसेवाह केरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मोघा आदि मौजूद रहे।

Presented in Hindustan Times

- Television clips :-



Television telecast on News 18 Uttar Pradesh

